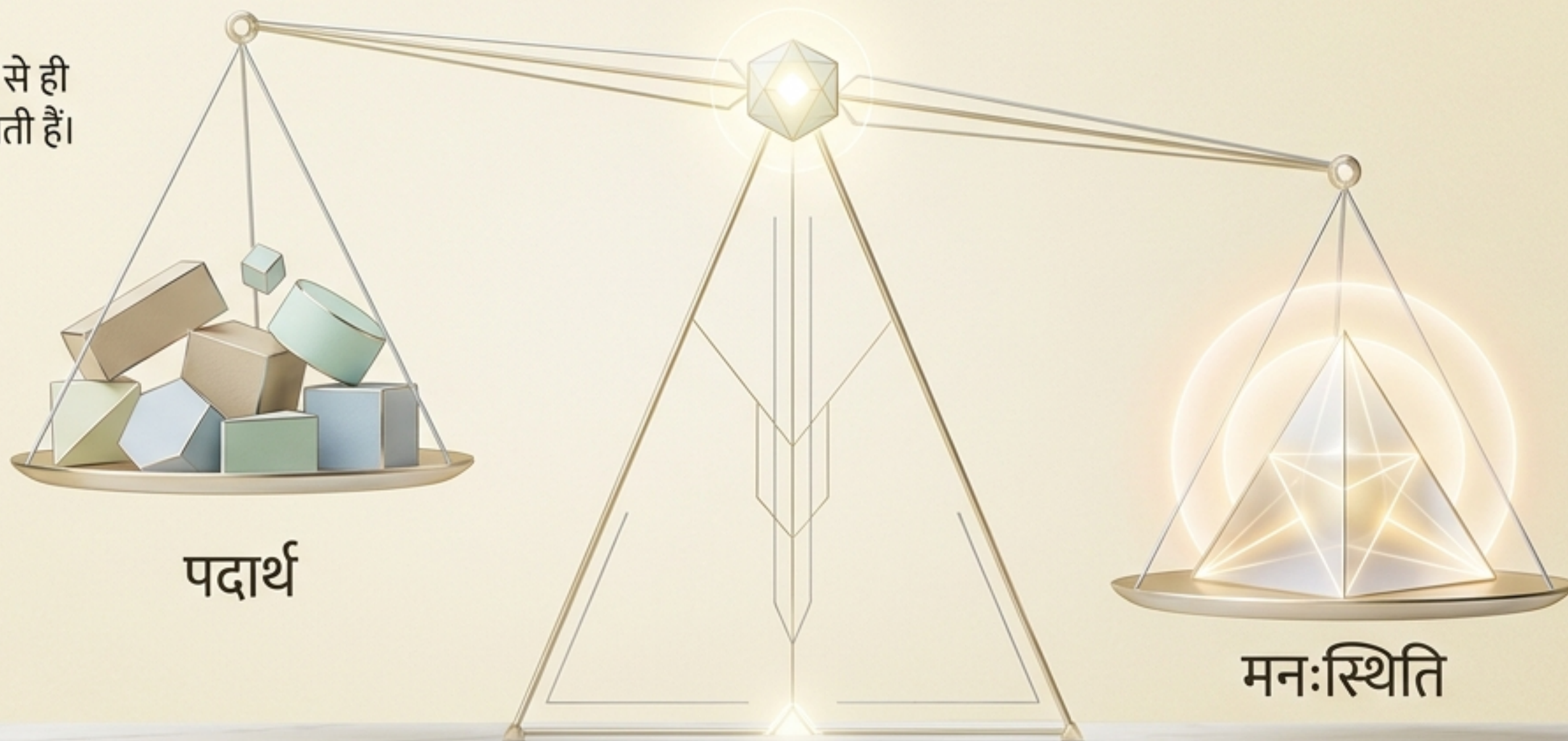


समस्या: क्या साधनों की
बहुलता से सुख मिलता है?

मनःस्थिति बदले, तो परिस्थिति बदले

विज्ञान और अध्यात्म का तार्किक विश्लेषण (प्रथम चार अध्याय)

निष्कर्ष: मनःस्थिति से ही
परिस्थितियाँ जन्म लेती हैं।

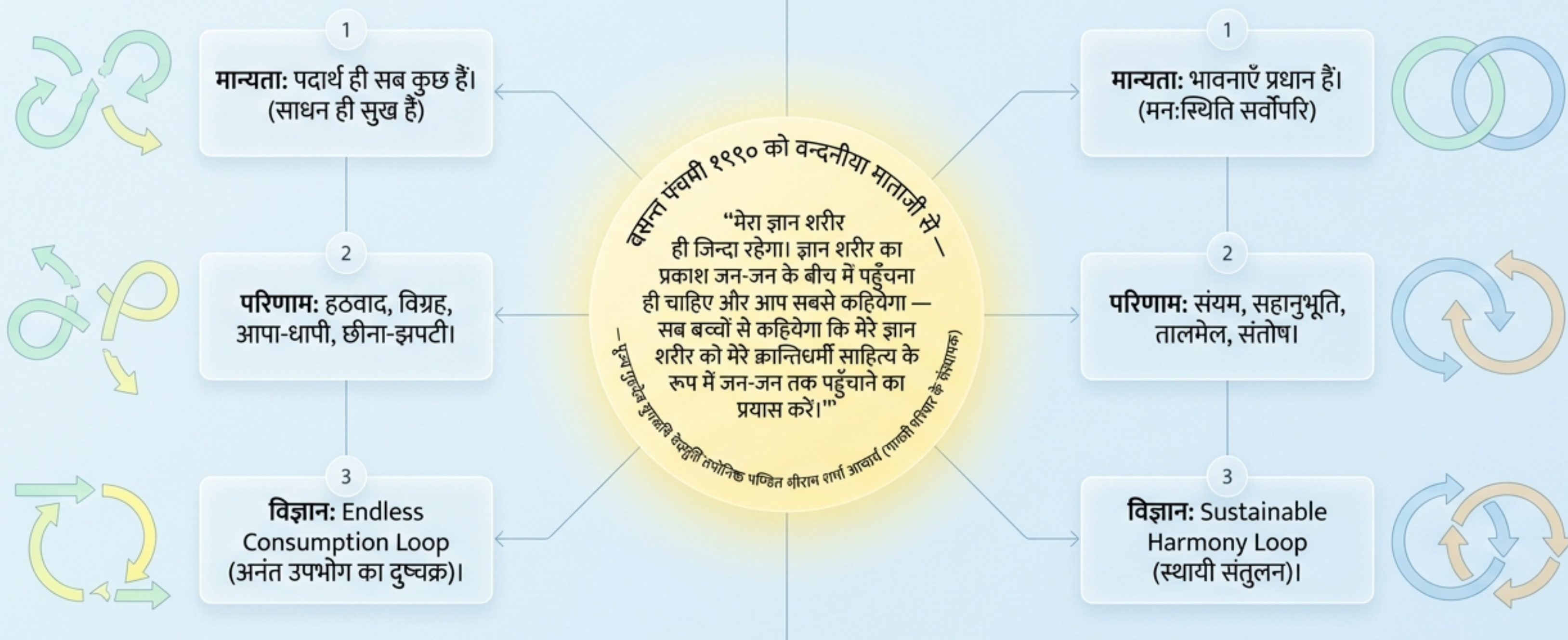


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच स में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

देवासुर संग्राम: विचारधाराओं का वैज्ञानिक संघर्ष

दैत्य पक्ष (भौतिकतावाद)

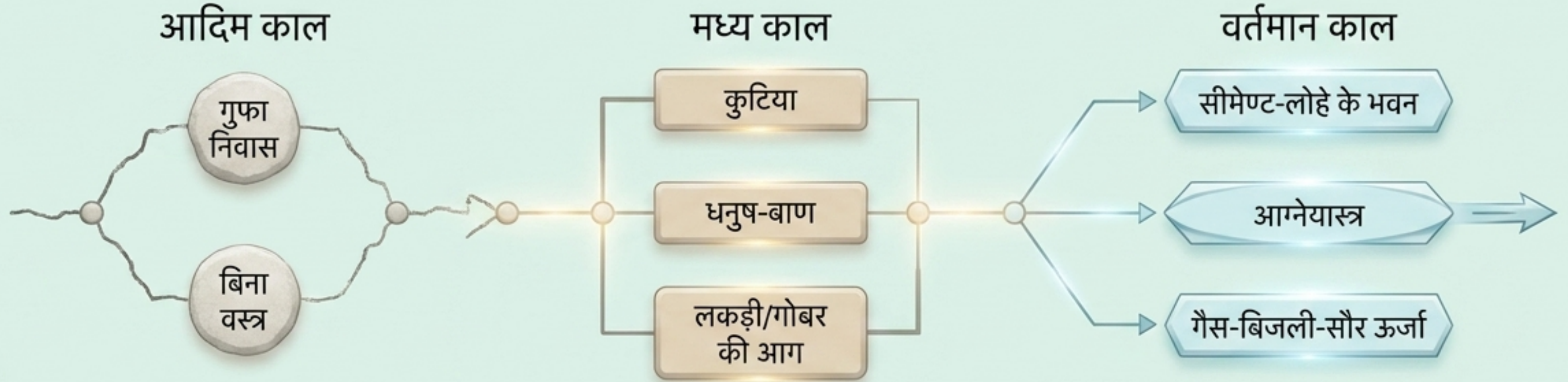
देव पक्ष (आध्यात्मिकतावाद)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान सत्तर चारों आप सबसे कहियेगा — ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्यके रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

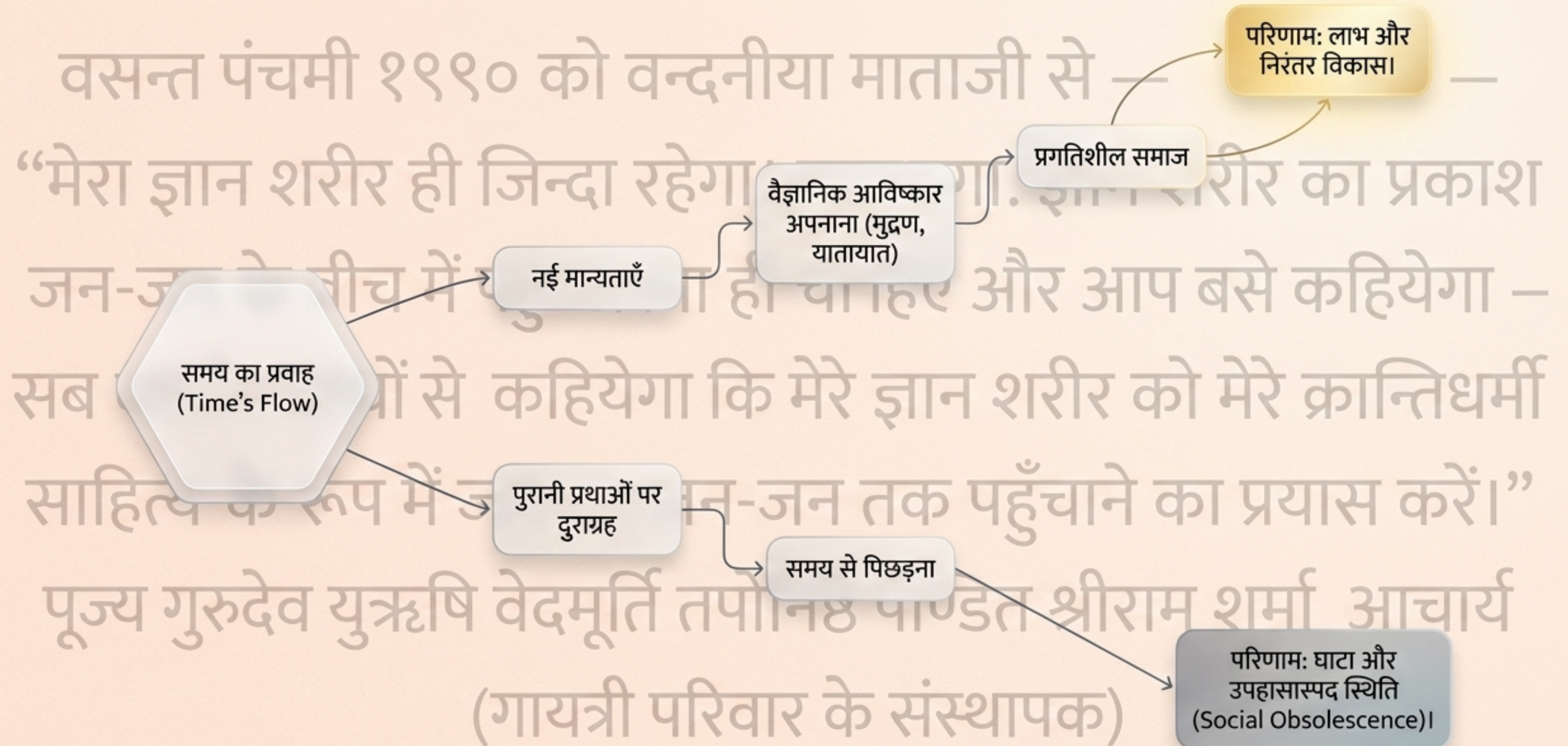
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय 1: युग-धर्म का परिपालन अनिवार्य (विकास का नियम)



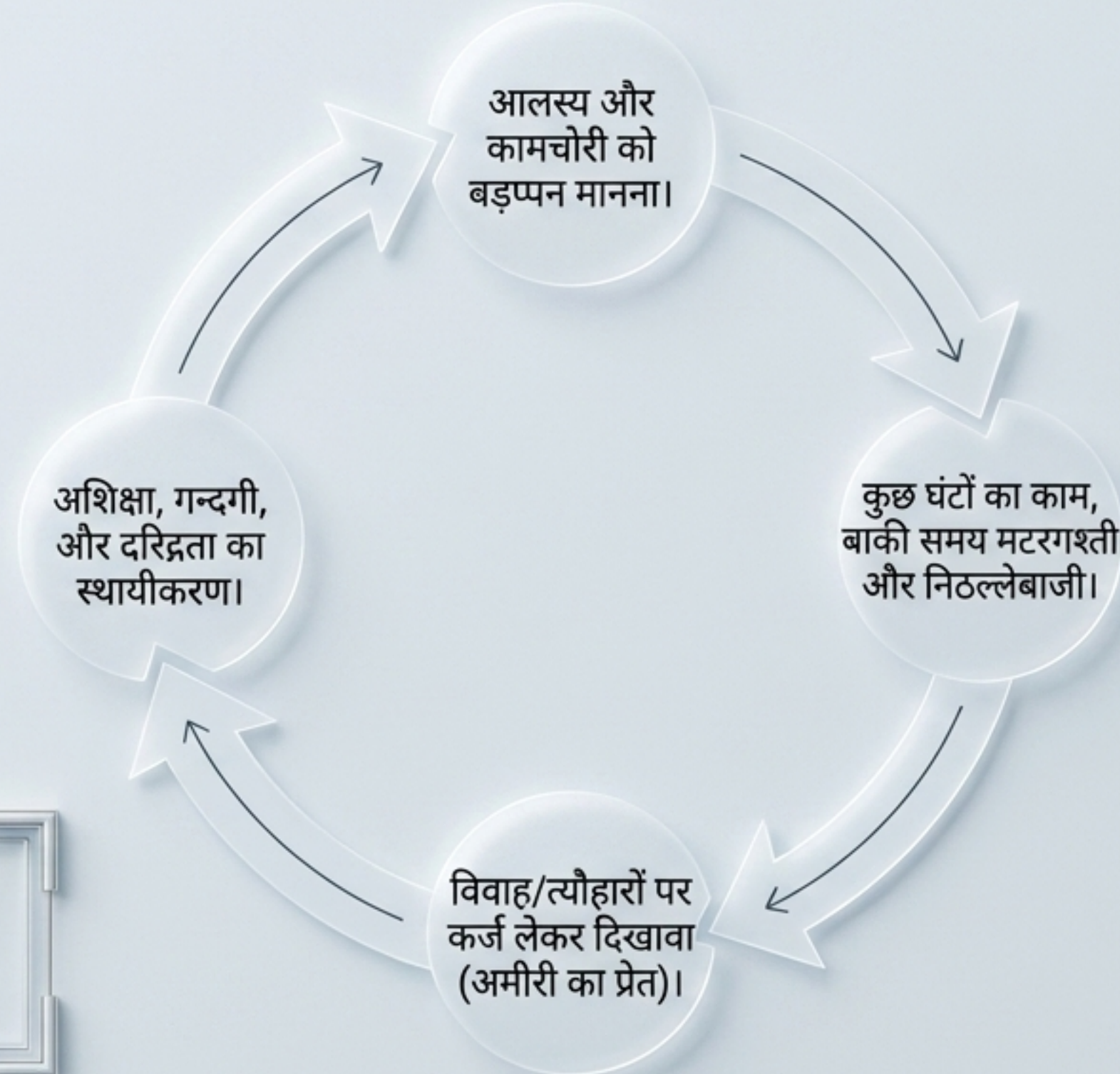
परिवर्तन प्रकृति का अटल सत्य है।
आयु, कक्षा, और मौसम के साथ जैसे
व्यवस्था बदलती है, वैसे ही समाज को
नई नीतियाँ अपनानी पड़ती हैं।

बदलता समय: दो मार्ग, दो परिणाम



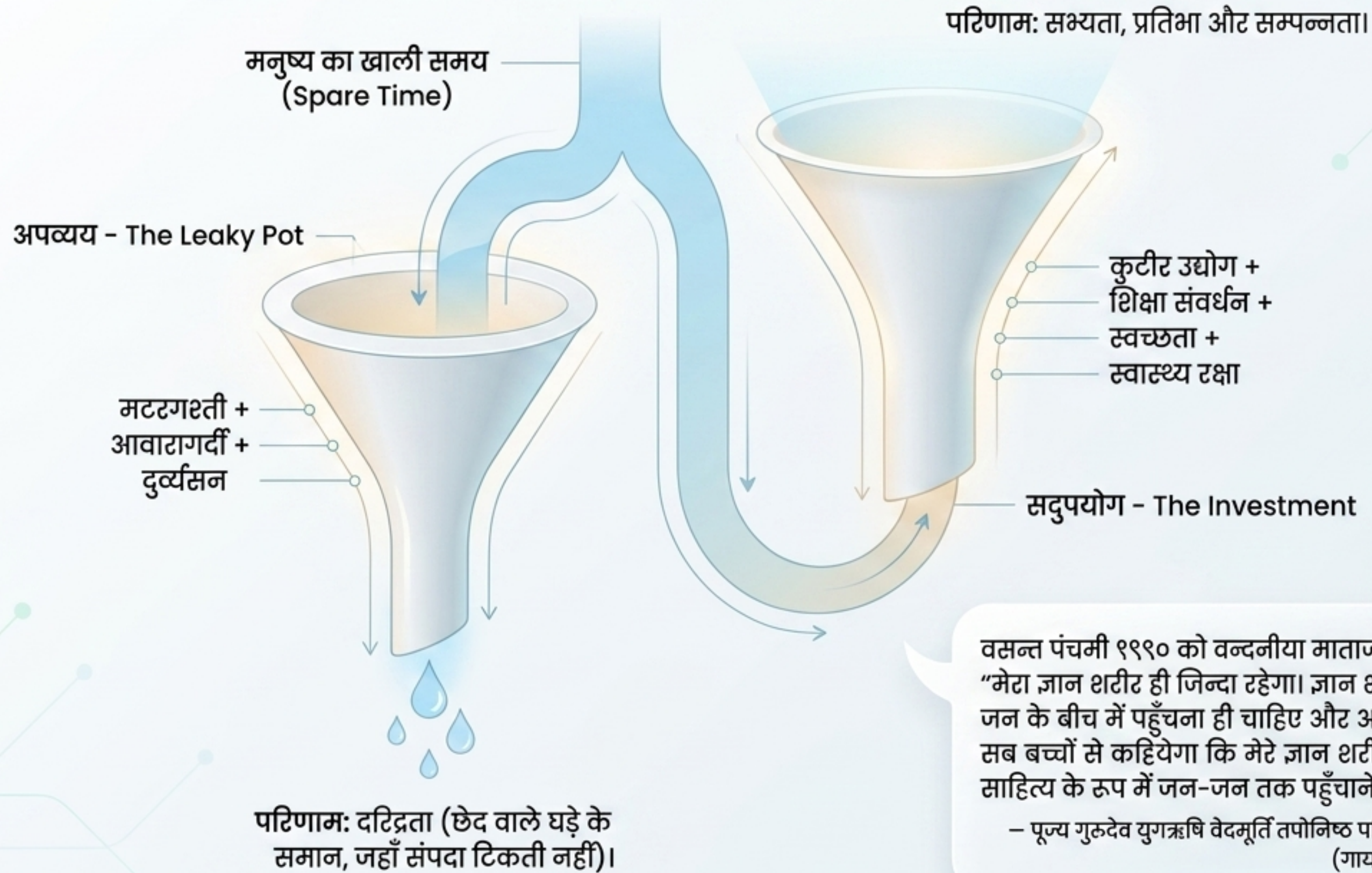
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय 2: अमीरी का झूठा आडम्बर (सामाजिक पतन का चक्र)



मनोवैज्ञानिक सत्य: यह 'बेशरम बेल' की तरह है। जहाँ परिश्रम को अपमान माना जाएगा, वहाँ प्रगति असंभव है।

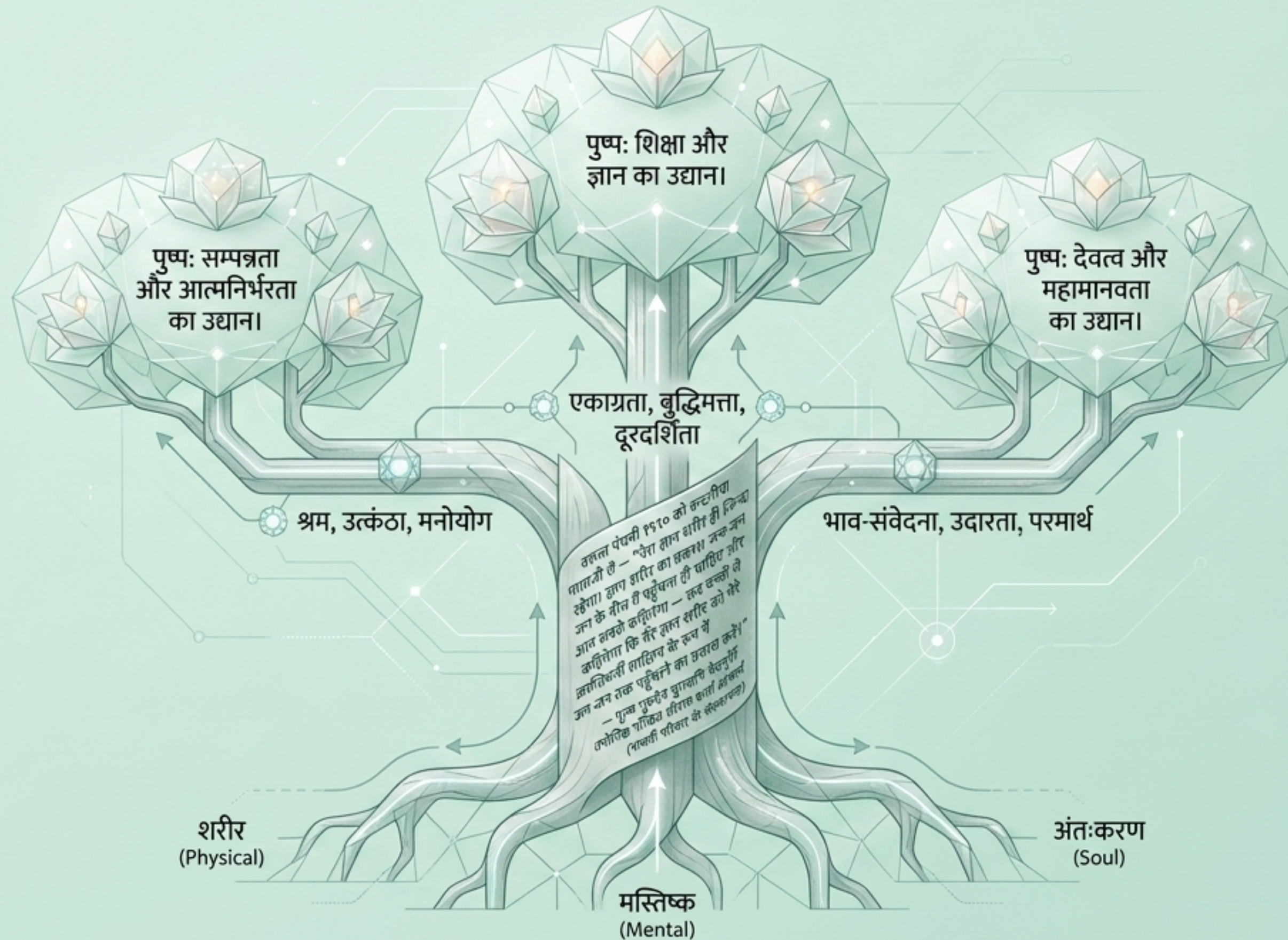
समय का अर्थशास्त्र: अपव्यय बनाम सदुपयोग



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

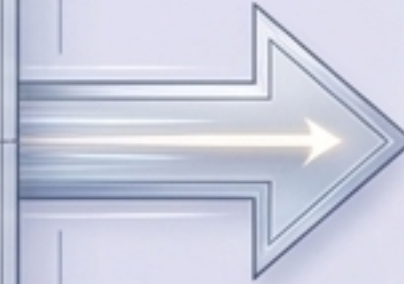
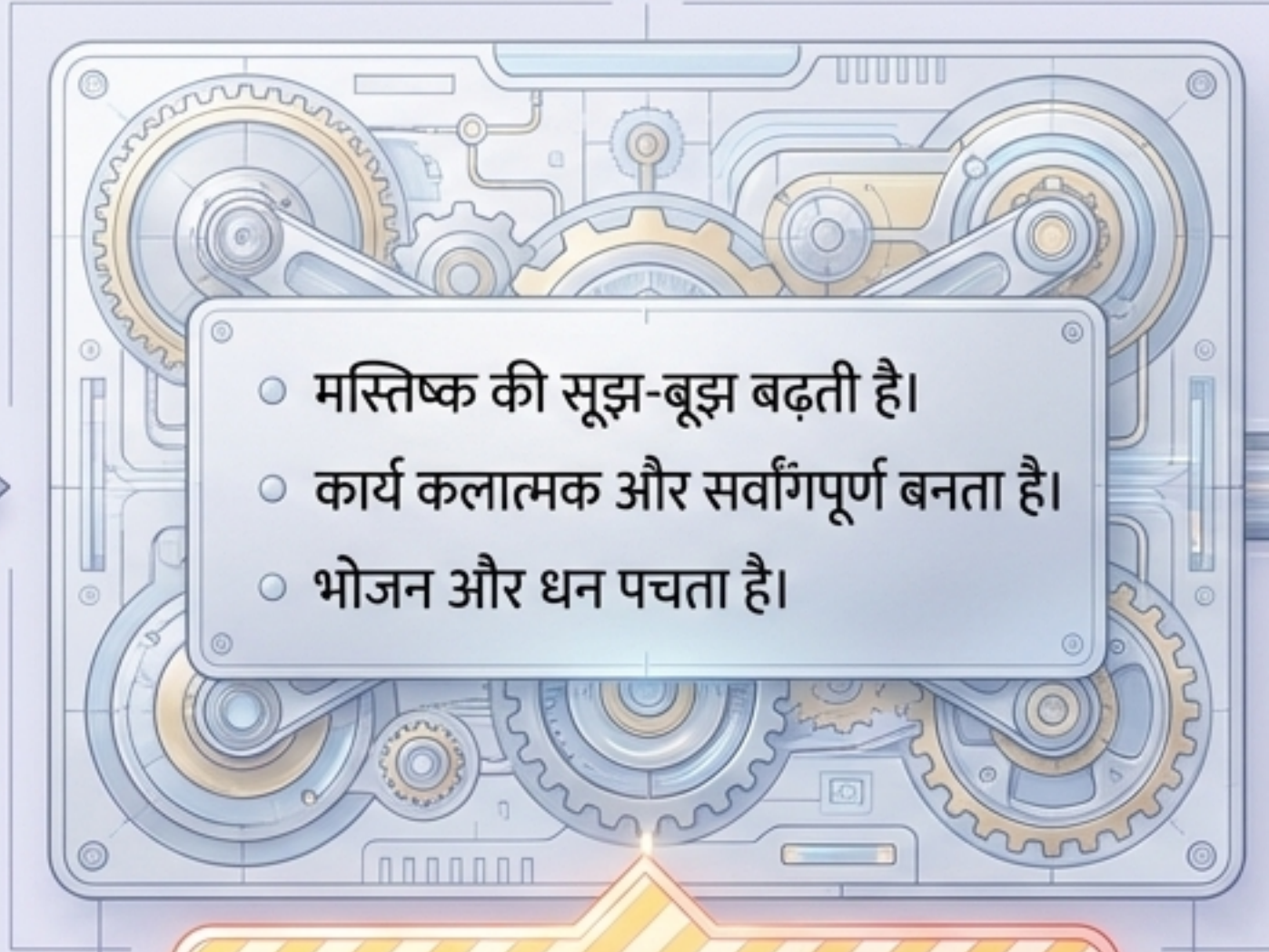
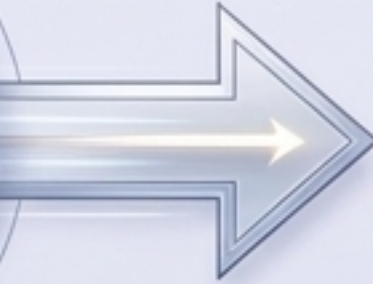
अध्याय 3: व्यक्तित्व के तीन उद्यान (The 3 Gardens of Human Capital)



प्रथम उद्यान: श्रम का विज्ञान और परावलंबन का अंत

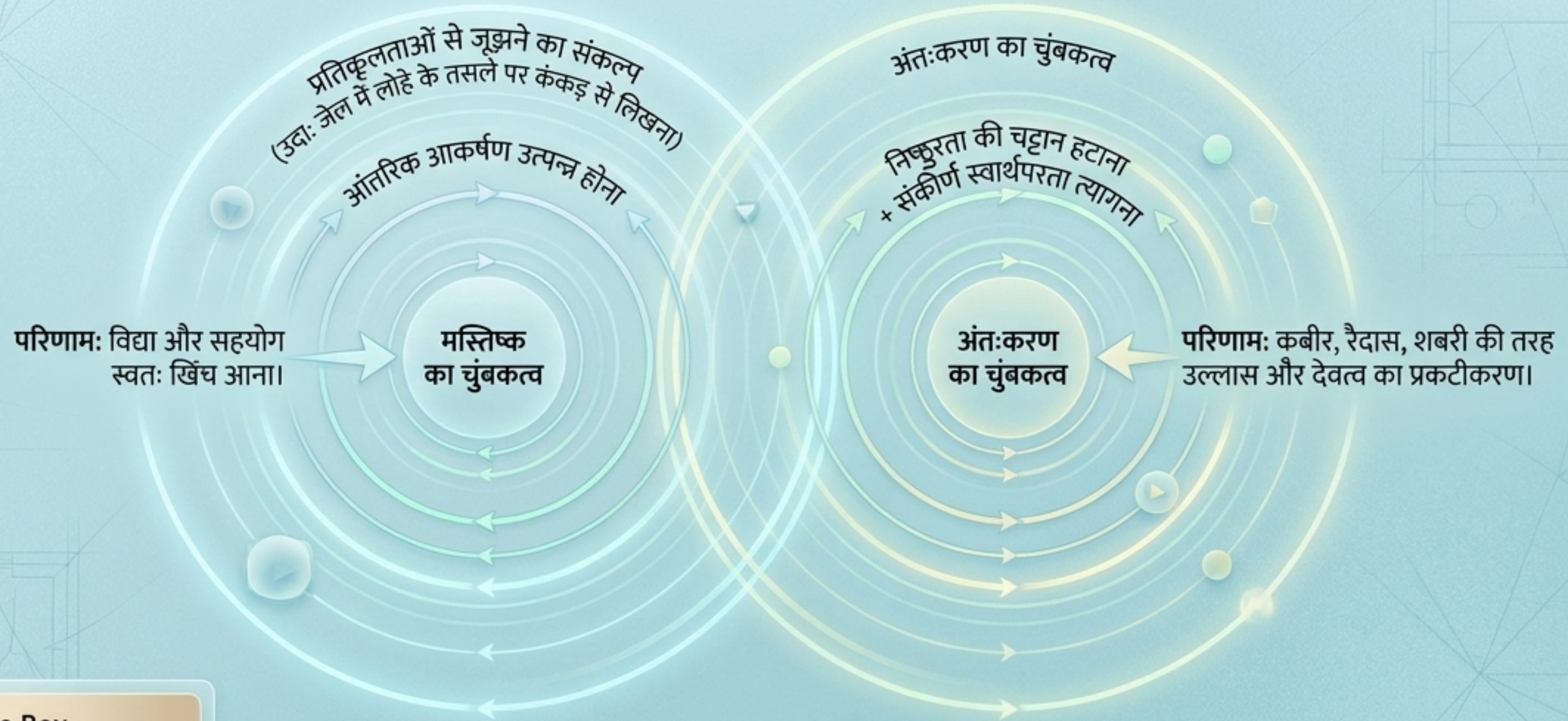
Cognitive Blueprint and Illuminated Logic Pathways

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकारा जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब
वच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुठदेव सुगठुषि वेदपूति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



विपरीत सत्य: हराम का माल हजम नहीं होता।
बिना श्रम की सम्पदा पतन की ओर ले जाती है।

द्वितीय एवं तृतीय उद्यान: ज्ञान और भावना का चुम्बकत्व



Core Principle Box

‘एकला चलो रे’ - आत्मबल के धनी
अपना वातावरण स्वयं बनाते हैं।

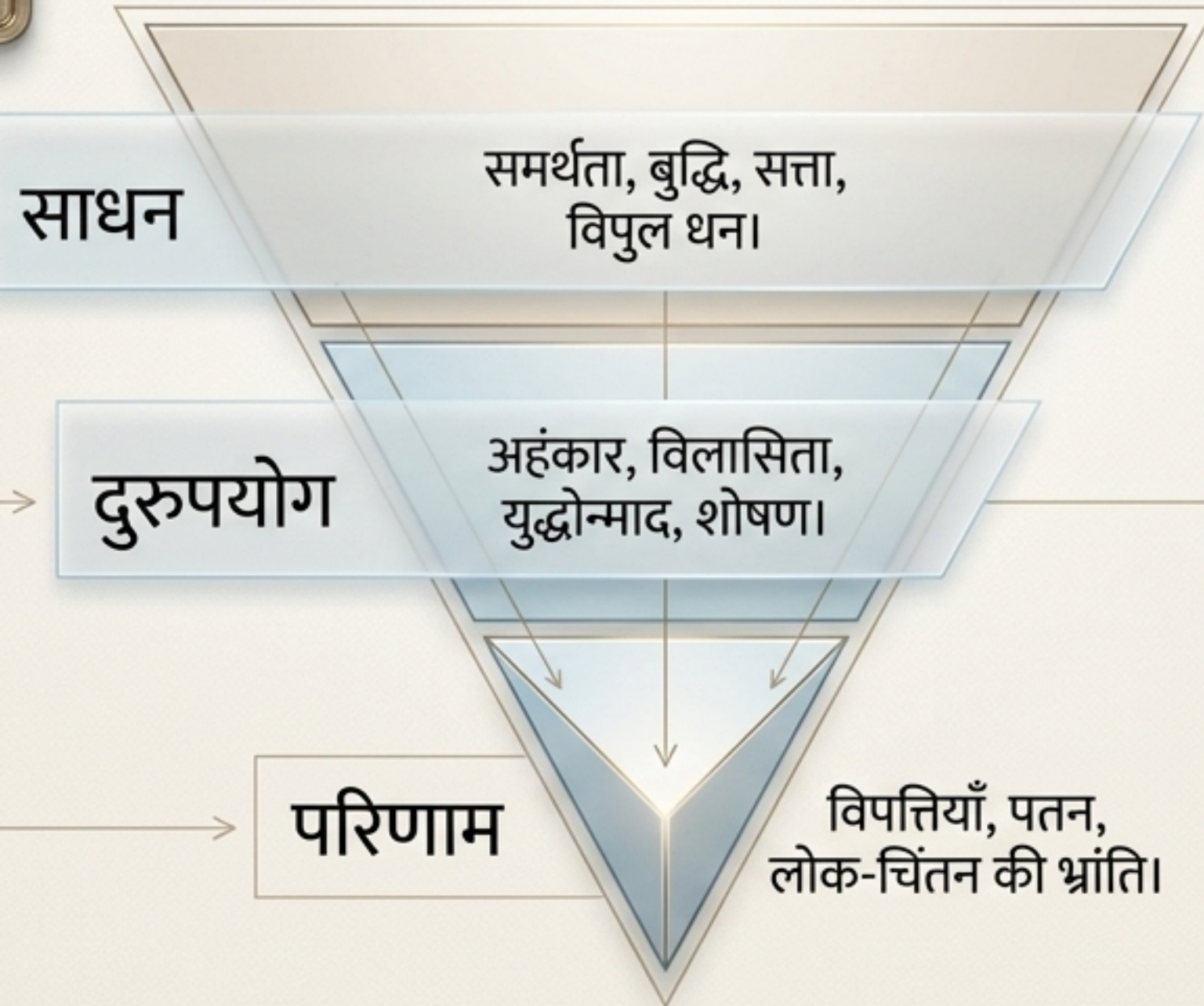
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वज्रन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

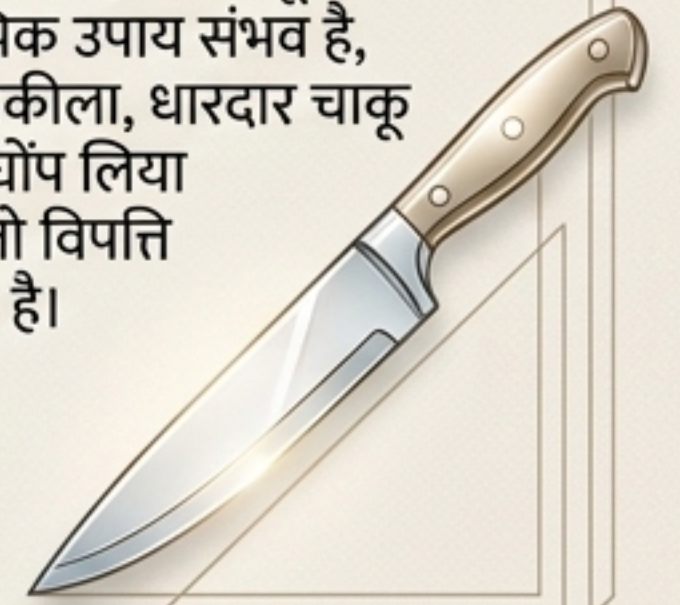
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब वच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
पुण्ड्रवि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय 4: साधनों का बाहुल्य + दुरुपयोग = महाविनाश

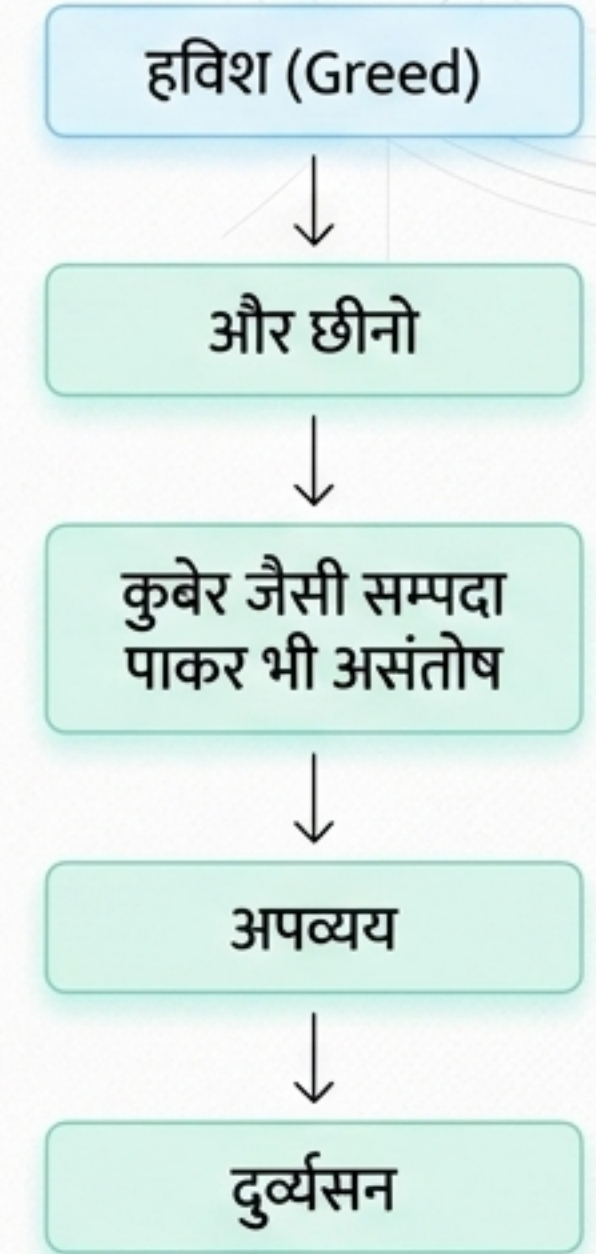
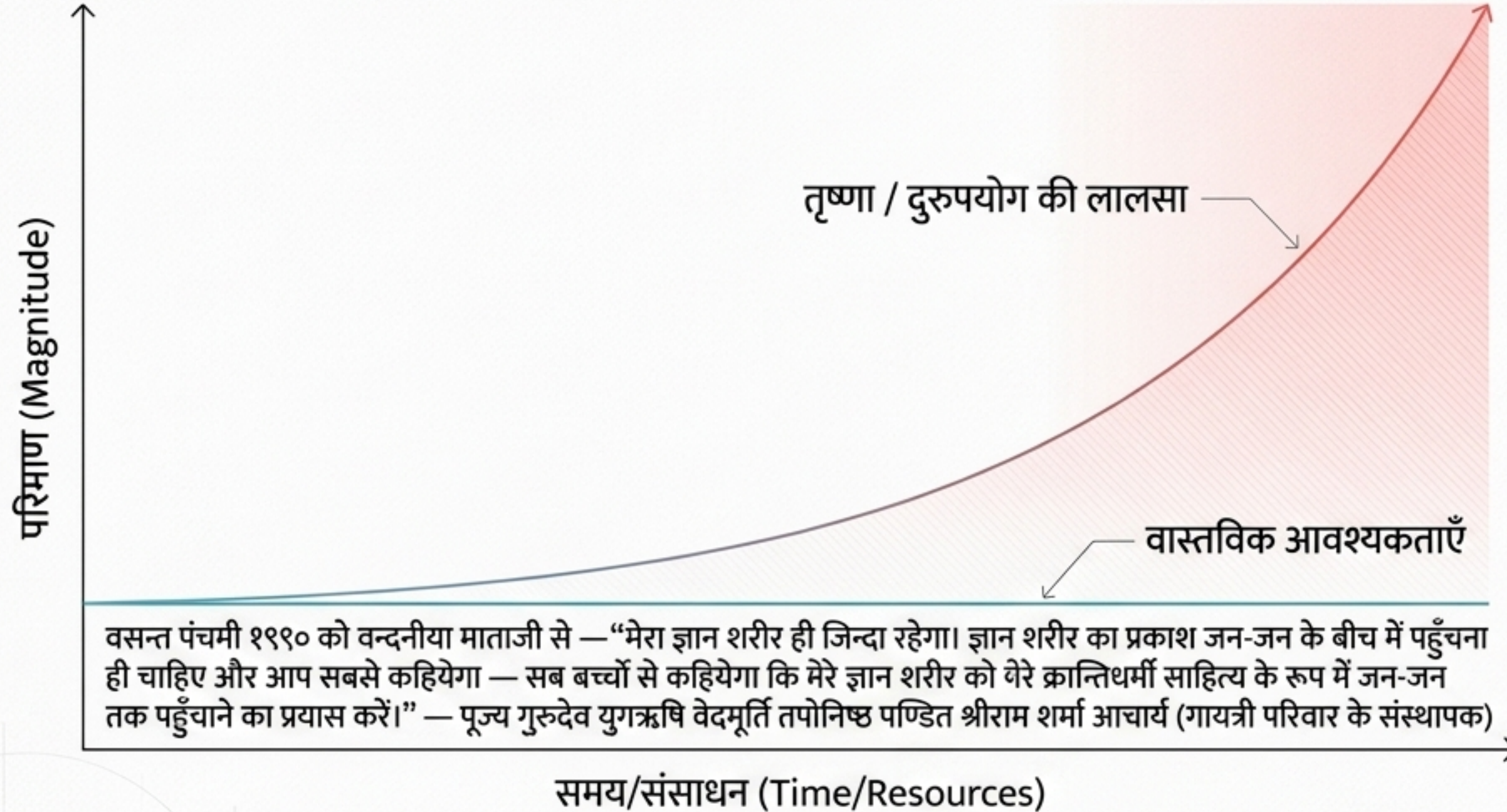


चाकू का विज्ञान: चाकू न होने पर वैकल्पिक उपाय संभव है, पर चमकीला, धारदार चाकू पेट में घोंप लिया जाए, तो विपत्ति निश्चित है।



गए-गुजरे लोग उतना अहित नहीं करते, जितना साधन-सम्पन्न बुद्धिजीवी दुरुपयोग करके करते हैं।

तृष्णा का मनोविज्ञान: आवश्यकता बनाम हविश



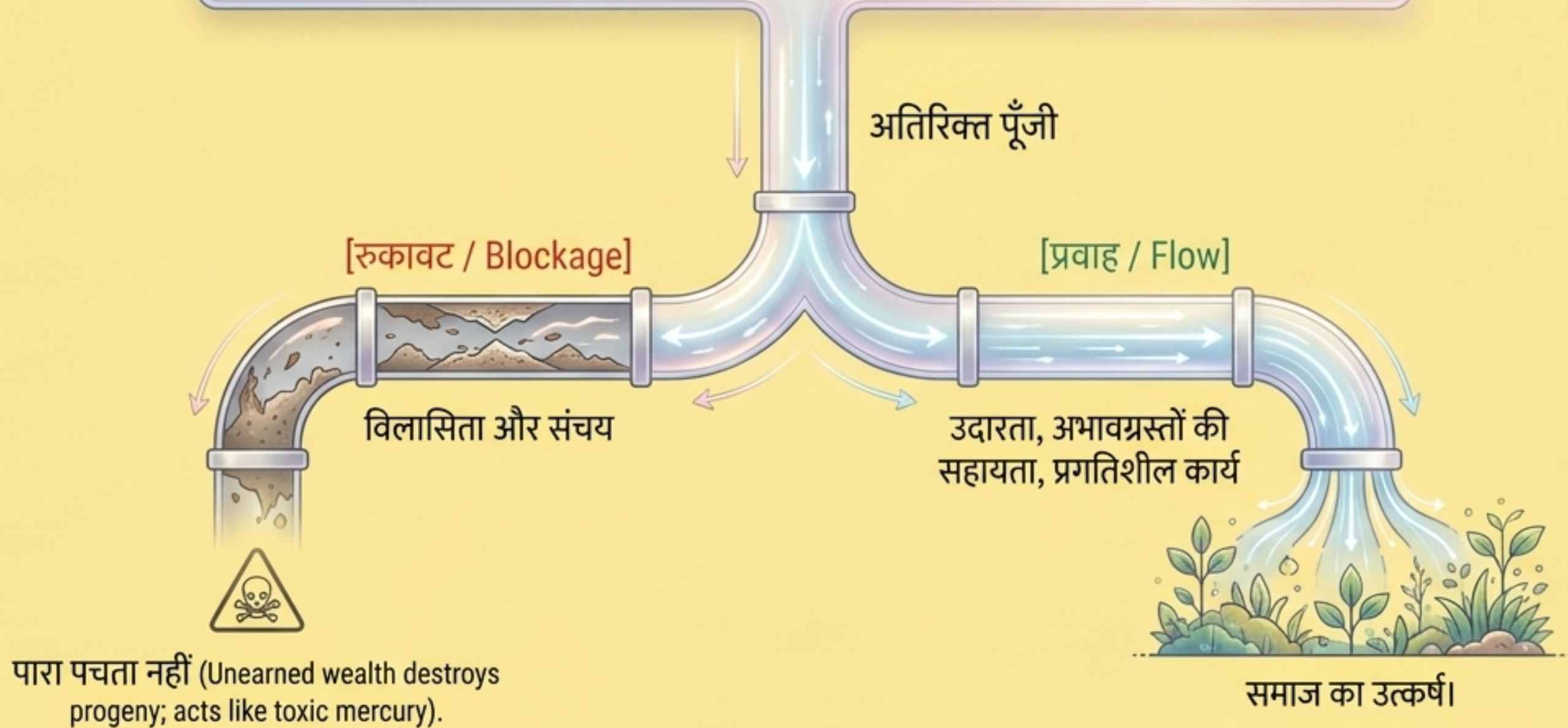
Conclusion Node

अभाव साधनों का नहीं, बल्कि बौद्धिक विभ्रम का है।

समृद्धि का वास्तविक सूत्र: उपार्जन और वितरण

The Golden Equation

सौ हाथों से कमाना + हजार हाथों से खर्च करना (सत्प्रयोजन हेतु) = अभ्युदय

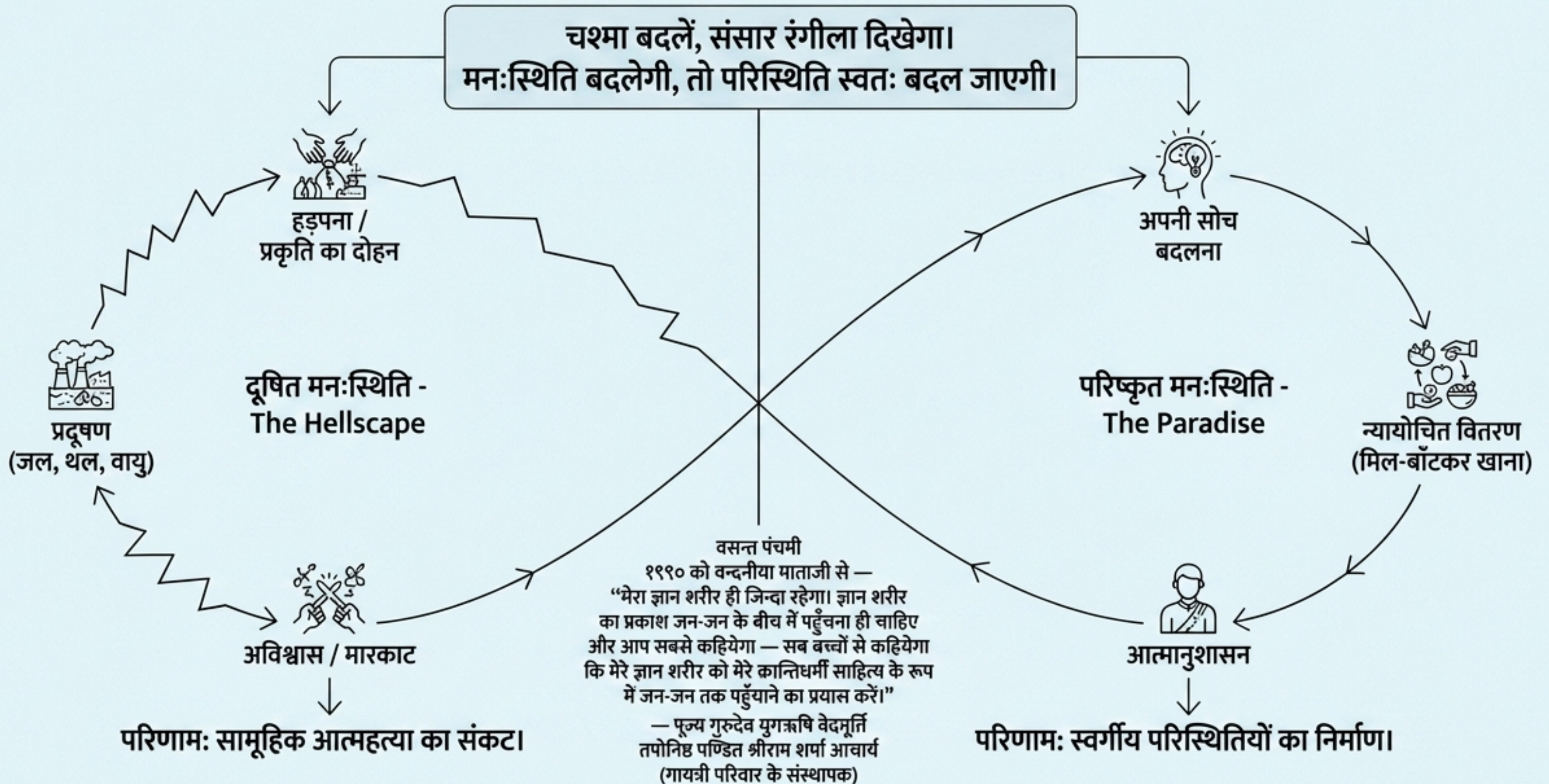


महामानव बनने के तीन आधार (सद्गुणों की अनिवार्यता)



कमाने वाला ही खाये (मत्स्य न्याय)
वाली नीति अपनाई गई, तो दुनिया
भेड़ियों का समाज बन जाएगी।

अंतिम निष्कर्ष: प्रकृति का पयपान बनाम सामूहिक सर्वनाश



समग्र दृष्टि: जीवन विज्ञान का 'कॉग्निटिव ब्लूप्रिंट'

